● सुनो, समझो और बताओ :

४ नई रीत

-प्रताप सहगल

इस एकांकी में मित्र के जन्म दिन पर एक अलग तरह के उपहार द्‌वारा वृक्षारोपण को बढ़ावा देने की बात की गई है ।

*** चित्र में दिए गए विराम चिह्नों को समझो और प्रयोग करो ।**

पात्र : (१) देवांश
(२) पापा (देवेंद्र) : देवांश के पापा
(३) मम्मी (देवयानी) : देवांश की माँ
(४) मिताली : देवांश की बहन
(५) नीलेश, अनमोल, मानस, सनी सरदार और चार-छह लड़के, सभी देवांश के दोस्त
(६) बिमला : घर में काम करनेवाली

[मंच पर प्रकाश फैलता है । एक कमरे का दृश्य। गुब्बारों और सजावट के सामान से सजा हुआ। खाली मेज लगी हुई है । दूसरी ओर संगीत के वाद्‌ययंत्र पड़े हुए हैं । देवांश का जन्मदिन है । देवांश के पापा और मम्मी का कमरे में प्रवेश । दोनों एक निगाह कमरे की सजावट पर डालते हैं । मिताली ने देवांश की आँखों को अपने हाथों से ढँका हुआ है।]

मिताली : (मंच पर प्रवेश करते हुए) यह रहा तुम्हारा कमरा !

देवांश : हाथ तो हटाओ । (मिताली देवांश की आँखों से हाथ हटा लेती है । देवांश कमरे की सजावट देखकर अपनी खुशी कूद-कूदकर प्रकट करता है ।)

पापा : आज तुम बारह साल के हो रहे हो... आज खूब मजे करो !

मम्मी : तुम्हारे सब दोस्त कहाँ रह गए?

मिताली : (कमरे के दरवाजे की ओर देखते हुए) हाय ! नीलेश, आओ ।

देवांश : बड़ी देर कर दी, बाकी सब कहाँ हैं? (तभी एक के बाद एक दोस्तों का प्रवेश । सभी के हाथ में कोई-न-कोई उपहार है । देवांश उन सबका परिचय अपने मम्मी, पापा और मिताली से करवाता है ।)

नीलेश : यह अनमोल, यह रहा सनी सरदार ! (तीनों थोड़ा-सा झूमते हुए गाते हैं और एक-दूसरे के गले मिलते

❑ ''चलो, मत रुको । चलो मत, रुको'' इसी प्रकार के अन्य वाक्य श्यामपट्ट पर लिखें । उनमें विराम चिह्नों का उपयोग करें । नए विराम चिह्नों (बड़ा कोष्ठक '[]', छोटा कोष्ठक '()', '- ' योजक चिह्न,' –' निर्देशक चिह्न) का प्रयोग समझाएँ ।

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि तुम अपने गाँव का मुखिया बन जाओ तो .....

हैं । इतने में चार-पाँच दोस्त और आ जाते हैं । यानी एक उत्सव का-सा माहौल बन जाता है ।)

देवांश : मानस नहीं आया ?

नीलेश : लगता है, अभी भी तुमसे नाराज है ।

पापा : नाराज क्यों ?

मम्मी : की होगी कोई शरारत, उसे आना चाहिए, बड़ा प्यारा बच्चा है !

(तभी मानस का प्रवेश । उसके हाथ में एक छोटा-सा गमला है, जिसमें गुलमोहर का पौधा लगा हुआ है । 'देवांश' कहते हुए गमला उसके हाथ में दे देता है ।)

मानस : तुम्हारे जन्मदिन का गिफ्ट है, इसे आज ही घर में या घर के पास कहीं भी रोप देना । बड़ी जल्दी बढ़ता है गुलमोहर । (देवांश सहित सभी दोस्त हैरान-से हैं कि मानस जन्मदिन पर यह कैसा उपहार लाया है ।)

नीलेश : मैं कह रहा था न, मानस तुझसे नाराज है । अरे, जन्मदिन पर कोई गमला लाता है ?

मानस : (रुआँसा-सा) देवांश तुझे अच्छा नहीं लगा तो मैं चला जाता हूँ । (गमला उठाकर जाने लगता है ।)

पापा : मानस ! रुको, तुम वापस नहीं जाओगे ! (मानस रुक जाता है ।) अच्छा यह बताओ कि यह कल्पना तुम्हें किसने दी ?

मानस : अंकल, मेरी मम्मी ने, मेरी मम्मी कॉलेज में पढ़ाती हैं, मेरी मम्मी कहती हैं, जैसे हमें ऑक्सीजन, पानी की आवश्यकता होती है वैसे ही आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत पेड़ों की है... पेड़ लगाओ ।

पापा : मैं भी यही कहता हूँ, क्यों देवयानी ?

मम्मी : हाँ, मैं भी यही कहती हूँ !

पापा : मिताली, वो हारमोनियम इधर लाना तो । (मिताली हारमोनियम लाकर पापा को देती है ।)

(घर का काम करने वाली बिमला का प्रवेश)

मम्मी : कहाँ रह गई थी ? मैंने कहा था, जल्दी आना शाम को ।

बिमला : क्या करती बीबी जी, वो है न बाबा, उसने फिर वही चीज छोड़ दी... घर में आ गई चीज । (पापा और बच्चे बड़े ध्यान से बिमला की बात सुन रहे हैं ।)

❑ एकांकी का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । उनके घर आनेवाले मेहमानों के संदर्भ में उनसे उनके अनुभव पूछें । प्रश्नोत्तर के माध्यम से शिष्टाचार संबंधी चर्चा करें । पात्रानुसार विद्यार्थी खड़े करके एकांकी का वाचन करवाएँ ।

खोजबीन

ओजोन परत के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करो ।

पापा : चीज, क्या चीज ?

बिमला : बीबी जी सब जानती हैं । (पापा मम्मी की ओर देखते हैं ।)

मम्मी : इसकी अपनी भाषा है बात समझाने की, कोई आत्मा-वात्मा, भूत-प्रेत का चक्कर है !

पापा : अरे, किन चक्करों में पड़ी हो ! यह सब अपने मन का डर होता है, जिसका फायदा ये ढोंगी लोग उठाते हैं... हम तो यहाँ नई रीत की बात कर रहे हैं और तुम लोग पड़े हो पुराने जमाने में ! तुम्हें कैसे नजर आ गई वह चीज ? (बिमला मुँह बिचकाकर रसोई में जाने लगती है ।)

पापा : रुको ।

मम्मी : काम करने दो उसे ।

पापा : नहीं, इसे भी सुनने दो, बैठो ! (बिमला एक ओर बैठ जाती है ।)

पापा : हाँ, मैं कह रहा था, नई रीत, चीज-वीज छोड़ो, बैठो और सुनो । हाँ, उपहार देने की यह 'नई रीत' हो गई । तुम सभी अभी खूब-खूब नाचना, खूब-खूब मजे करना, लेकिन पहले सब मिलकर नई रीत बनाते हैं... मिताली, देवयानी, देवांश और सब बच्चो, ध्यान से सुनना और मेरा साथ देना । (हारमोनियम पर धुन छेड़ते हैं । आलाप लेते हैं और फिर गाने लगते हैं ।)

सभी बच्चे : चलो, नई रीत चलाएँ ।

पापा : आऽऽऽऽ आऽऽऽऽ चलो नई कोई रीत चलाएँ, जन्मदिन जब-जब हो जिसका । बोलो बच्चो

बच्चे : जन्मदिन जब-जब हो जिसका

पापा : आस-पास कुछ पेड़ लगाएँ । आऽऽऽऽ आस-पास कुछ पेड़ लगाएँ ।

सभी मिलकर : चलो नई कोई रीत चलाएँ ।

पापा : बस-बस... बस, बहुत हो गया... (बिमला से) बात कुछ आई समझ में ? चलो अब केक काटेंगे ।

मम्मी : अभी केक नहीं । पहले अंत्याक्षरी खेलते हैं... खेलोगे ?

एक बच्चा : मुझे बहुत गाने याद हैं ।

पापा : नो गाने... यहाँ भी नई रीत ।

मम्मी : हाँ, आधे बच्चे इधर और आधे बच्चे उधर । (बच्चे उठकर बँट जाते हैं ।) हाँ, हम खेलेंगे देशों के नाम ।

सब बच्चे : तैयार ।

पापा : भारत ।

नीलेश : तंजानिआ ।

पापा : अनमोल आ से ।

अनमोल : आस्ट्रेलिया ।

मानस : य से या 'या' से ?

मिताली : दोनों में से किसी एक से चलेगा ।

मानस : यूरोप ।

देवांश : पेरिस ।

बिमला : (प्रवेश करते हुए) बीबी जी, हो गया और कुछ... ?

पापा : जल्दी क्या है, तुम्हारी उस चीज को मैंने पकड़ लिया है। (हँसने लगता है) चलो, अब केक काटते हैं।(केक पर मोमबत्तियाँ लगाकर जलाई जाती हैं। देवांश सभी के साथ मिलकर केक काटता है, सभी को खिलाता है फिर बज उठता है डेक। बच्चों के साथ देवयानी और देवेंद्र भी नाचते हैं।)

मम्मी : चलो बच्चो, अब कुछ पेटपूजा (एक ओर रखे डिब्बे एक-एक करके सभी बच्चों को पकड़ाती जाती हैं। बच्चे खाने और गप्पे लगाने में मस्त हो जाते हैं।)

(प्रकाश कुछ देर के लिए धीमा होता है। हलका-सा मधुर संगीत बजता रहता है। कुछ क्षणों बाद ही प्रकाश तेज होता है।)

पापा : आज मानस ने एक पौधा गिफ्ट करके नई रीत चलाई है। हमने भी सोच रखा था कि कुछ अलग करेंगे। आज उपहार में सभी को एक-एक किताब... देवांश।

(देवांश जल्दी से किताबें उठाकर लाता है। मिताली भी साथ देती है। देवांश एक-एक करके सभी बच्चों को उपहार के पैकेट पकड़ाना शुरू करता है। इसी के साथ प्रकाश धीरे-धीरे मंद होता है और 'चलो नई कोई रीत चलाएँ' गीत बजने लगता है।) (पटाक्षेप)

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

रीत = रीति, प्रथा

माहौल = वातावरण

हैरान = परेशान

मुहावरे

मुँह बिचकाना = मुँह टेढ़ा करना

गप्पे लगाना = बातें करना

स्वयं अध्ययन

आए हुए मेहमान के स्वागत हेतु किए जाने वाले अंग्रेजी संबोधनों की जानकारी एकत्रित करो।

अध्ययन कौशल

इस एकांकी को कक्षा में साभिनय प्रस्तुत करो।

सुनो तो जरा

अपरिचित व्यक्ति से मिलने पर किए जाने वाले संवादों को सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

तुम अतिथि बनकर किसके घर जाना चाहते हो ?

वाचन जगत से

स्वागत गीतों को पढ़ो और उनका संकलन करो ...

मेरी कलम से

अपने घर आए अतिथि सत्कार का कोई एक प्रसंग लिखो ।

❊ किसने किससे कहा ।

१. ''बड़ी जल्दी बढ़ता है गुलमोहर ।''
२. ''आज हमें सबसे ज्यादा जरुरत पेड़ों की है ..... पेड़ लगाओ ।''
३. ''यह सब अपने मन का डर होता है ।''
४. ''कोई आत्मा-वात्मा, भूत-प्रेत का चक्कर है ।''

विचार मंथन

।। अतिथि देवो भव ।।

सदैव ध्यान में रखो

किसी के घर जाने से पहले उसे सूचित किया जाना चाहिए ।

भाषा की ओर

संज्ञा के प्रकार पहचानकर तालिका पूर्ण करो ।

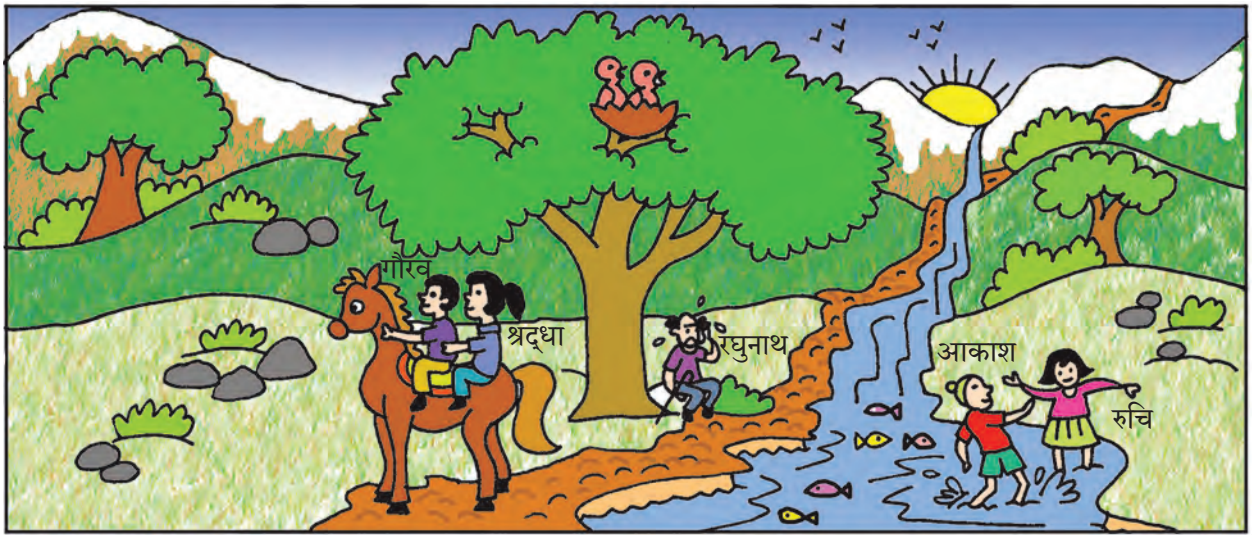

जातिवाचक	व्यक्तिवाचक	भाववाचक	समूहवाचक	द्रव्यवाचक
१.	१.	१.	१.	१.
२.	२.	२.	२.	२.
३.	३.	३.	३.	३.